।। साध सिध पारख को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ साध सिध पारख को अंग लिखंते ||

|| रेखता ||

देख सेंसार की झूट बाजी रची || समज जड जीव तूं मन मेरा ||
साच कूं उथपे झूट कूं थाप दे || ध्रक रे ध्रक नर जनम तेरा ||
जळ की बुंद सूं पिंड पेदा कियो || रिजक ही आण कर तो ही देवे ||
घाट ओ घाट मे राम रिछ्या करे || ताहिको नांव तू नाहे लेवे ||
आद अनाद मे नांव साचो संगी || रिजीयां मोजले मोख देवे ||
दास सुखराम के ध्रग मन तोय रे || राम कूं छोड क्या आन सेवे ||१||

जो तुझे संसारके पाँच विषयोके सुख सुख दिख रहे वे जड झूठे रचे हुये सभी सुख है । ये सुख तुझे संसारमे अटकाने के लिये बने है । इसलिये अरे मेरे जड मन,मेरे जड जीव ये सुख झूठे है यह तू ज्ञान दृष्टीसे समजा । सच्चे सुख पाँच विषयोके सुखो मे नही है । सच्चे सुख रामजीके ज्ञान विज्ञान वैराग्यमे है । ऐसे सच्चे रामजीके देशमे पहुंचानेवाले साधूके ज्ञानको तू उथाप देता है और विषयोके सुखो मे अटकानेवाले सिध्दियो के ज्ञान को जोर लगा लगा के थापता है । ऐसे तेरे मनुष्य जन्म को धिक्कार है,धिक्कार है । उस रामजीने जलके एक बूँदसे तेरा पिंड पैदा किया । तेरा माँ के पेट मे पिंड बनाते वक्त तूझे पचेगा ऐसा अनाज पहुँचाया । गर्भघाट सरीखे कठीण घाटमे तेरी रक्षा की ऐसे रामजी का नाम तूझे साधू बनाते है तो वह नाम लेता नही उथाप देता । आद अनाद से राम का नाम ही तेरा सच्चा साथी है । वह रिजने पे तुझे बक्षीसमे मोक्ष पद देगा । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,अरे मन,ऐसे अमरलोकके सुखोमे पहुँचानेवाले उपकारी रामजीकी भक्ती छोडकर जिन भक्तीयोसे जीव नरक मे गिरता ऐसे अन्य देवतावोकी भक्ती धारण करता इसलिये तुझे धिक्कार है,धिक्कार है ।१।

चेत बिरीया थको समज बिचार कर || लोहो का ताव ज्यूं आव जावे ||
बोहोत पिस्ता वसी अंत लोहार ज्यूं || ताव सूं काड घण नाहे बावे ||
मांनषो जन्म नर नीट ते पावीयो || सुभ सो काम हल्ल बेग कीजि ||
जक्त के संग तूं मुक्त नही पावसी || साध की संगत कोई हेर लीजे ||
जम का दूत बिन भजन तोय मारसी || नर्क निगोद के बीच डारे ||
दास सुखराम अेहे लोक के वास्ते || जीत पासो पडयो काय हारे ||२||

अरे जड जीव,अरे मन तुझे अमर लोक मे ले जानेवाला अमूल्य साधन ऐसा मनुष्य देह मिला है । यह हाथ से निकल जाने के पहले तू समज । जैसे लोहार लाल-लाल तपे हुये लोहे पे समय पे घण मारने मे कसर कर देता और लोहा थंडा हो जाता याने घण मारने के लायक नही रहता तब लोहार बहोत पस्तावा करता इसीप्रकार रामजी पाने की तेरी उमर बीते जा रही है और ऐसी उमर हाथ से बित जाने पे याने मनुष्य देह हाथ से छूट

जाने पे रामजी पाने योग हाथ से निकल जायेगा इसका त्रेचालीस लाख बीस हजार साल तक अखंडीत पस्तावा रहेगा । यह मनुष्य देह चौरासी लाख योनीयोके दु:ख झेलते झेलते बडे मूश्किल से मिला है । अब कोई दिलाई न करते रामजी मिलाने का शुभ काम जल्दी कर । जगत के नरी नारी ज्ञानी,ध्यानी, तथा देवी–देवतावोका साथ लेनेसे तुझे यमराजसे मुक्ती नही होगी जिनसे तूझे यमराज से मुक्ती मिलेगी ऐसा राम रामजी के साधू संगत मे मिलता इसलिये तू ऐसे साधू को खोज और उनकी संगत कर । रामजी की भक्ती न करने पे जम तुझे हेरकर भाँती–भाँतीसे मार देगा और निगोद नर्कमे डालेगा । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि यहाँ के विषय वासनावो के सुख के लिये सिध्दियो की भक्ती मत कर । यह मनुष्य देह यम के दु:खो से छुटकारा पानेवाला डाव है। ऐसा मनुष्य देह विषय वासनावो के लिये सिध्दियो के पर्चे चमेत्कार मे लगाकर गमा मत ।।।२।।

बेद झाडा गरा जक्त आधिन रे ।। पित्र कूं पूज बोहोरी न भाके ।।
पीर भोपा तणी मान संसार मे ।। आन की इष्ट ले सीस राखे ।।
भेष अब धुतरो पेर आसन करे ।। मुन सो पकड कछु होय भोळा ।।
रोग मथ वाय धन पुत्र की चाहीले ।। सिध्द कर नार नर फिरत दोळा ।।
साध निज नाव की गम नही जक्त कूँ ।। मोख पर लोक की चाहे नाही ।।
दास सुखराम रिध्ध सिध्ध के वास्ते ।रात दिन नार नर पचत जाही ।।३।।

जगतके लोग रोग निवारणार्थ झाडा झपाटा जाननेवाले वैद्योके आधिन बनके रहते । पितरोको पूजते और पितरोका अनेक प्रकार के रिन याने मानता रखते । पितरोको तेरी कढई करुँगा नाडा सिचूँगा,तेरे नामसे कपडे दूँगा ऐसे अनेक प्रकारकी मानता बोलते । संसारके लोग अपने पुत्र,विवाह,धन बिमारी आदिके विषयोके सुखोके लिये पीर,भोपा,(गोंधळी,भराडी)की मानता रखते । संसार के लोग जो देवता निर अपराधी प्राणीयो की बली माँगते ऐसे देवतावोको अपने सिर पर इष्ट देवता करके धारण कर रखते है । कितने ही अवधूत का भेष धारण करते और आसन कर राक्षसी सिध्दाईयो के परचे देते बैठते । कितनेही मौन धारण कर बैठते व मैले मंत्रोका उच्चारण कर राक्षसी रिध्दी–सिध्दी प्राप्त कर लेते । जगत को रिध्दी सिध्दीयो के पर्चे देते । ऐसे राक्षसी रिध्दी प्राप्त किये हुये सिध्दिया जगत मानता और रोग,धन,पुत्र,आदिके चाहनासे उनके इर्द गिर्द फिरता । जगत के लोगो को बडे सुख देनेवाले और सदाके लिये रोग, चिंता से मूक्ती करा देनेवाले साधू संत कि समज नही रहती । उनको काल के दु:खो से मोक्ष पाकर कालके परेके परलोक पानेकी चाहना भी नही रहती । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है मोक्षपद का महासुख देनेवाले संतो को त्यागते और रिध्दी सिध्दी के पर्चो के वास्ते सभी मनुष्य व स्त्रिया रातदिन पच पचकर थकते ।।।३।।

जोग निध निसो दिन काळ के बस हे ।। बोहोत प्रसाद तोई भूक लागे ।।
अेक सो बार जो चोर ठग जात हे ।। नेठ निध्यान सो धणी जागे ।।
हट कर दान दातांर सूं लेत हे ।। अखुट धन द्रब सो देत नाही ।।
सिध्द की बात सेंसार सो हद मे ।। तोल ज्यूं मोल फिर माप माही ।।
रेखतो बाच इतबार सब मानियो ।। अर्थ निज तत्त सब माही लीया ।।
दास सुखराम अमरिष निज साध था ।। रिष कर कोप श्राप दिया ।।४।।

जोगी,रिध्दी,सिध्दी आदि रातदिन कालके वश है । ये जोगी सिध्दकलासे भृगुटीमे जाकर बैठते वहाँ सुख और दु:ख बिना अनेक वर्ष रहते परंतु जैसे बहोत भोजन प्रसाद किया तो भी भूक लगती ऐसेही इन योगीयोको भृगुटी मे अनेक वर्ष तपने के बाद विषयो के सुखे की चाहना होती और ते भृगुटी त्यागकर मृत्युलोक मे आते । जैसे चोर और ठग अनेक बार चोरी और ठगाई करके जाता परंतु कभी ना कभी मालिक जागृत होता और उसे अंतमे पकडता है वैसेही इन जोगीयोको काल पकडता । ये जोगी सिध्दी हटकर जबरदस्तीसे दातारसे दान लेते व उन्हे दानके प्रित्येर्थ पर्चा चमत्कार कर अखूट न रहनेवाला सुखरुपी धन देते । इन जोगी,सिध्दीयो को रामनाकी साधू के समान सुखोका अखूट धन नही देते आता । सिध्दो की बात संसार के हद याने तीन लोकोके सुखो की मर्यादित है । सिध्द के पास रामनामी साधूके समान हद बेहद परे के अगम के सुख देने की सत्ता नही रहती । इन सिध्दियो की बात संसार मे ही तोलमोल के याने मोजेमापे याने गिनेमिने सुख रहते । तो तोलमोल नही करते आता याने मोजेमापे नही जाते ऐसे अखूट सुख नही रहते । यह रेखता बाचकर मेरे बात का विश्वास रखकर सभी मानो । और इसक अर्थ निजतत्त सब माही लिया । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है अमरीष राजा निज साधू था । दुर्वासा ऋषी सिध्द था । इस दुर्वासा ऋषी ने अमरीष राजापर कोप किया व अनावर क्रोध मे आकर शाप दिया ।।।४।।

रिष का वचन सो रिष मे उलटीयां ।। अेक सूं सेंस होय माय आया ।।
सुर्ग पाताळ तिहूं लोक रिख डोलियो ।। स्हाय नही होत यहाँ नेक भाया ।।
बिस्न पे जाय रिख करत अस्तुत हे ।। स्हां हर स्याम जूं करो मेरी ।।
लाय मे अंग अर प्राण जो प्रजळे ।। राख क्रतार अब श्रण तेरी ।।
क्हेत भगवान सत सांभळो रिखजी ।। साध का बचन मोय फिरे नाही ।।
तुम ही जाय अमरीख की श्रण लो ।। स्हाय तुम चेन सो हुवे वांही ।।
साध को बचन तिहूं लोक सब देवता ।। उलट पलटाय नही फेर दिया ।।
दास सुखराम के सांभळो सरबरे ।। साध अर सिध्ध अे फेर किया ।।५।।

ऋषीने दिया हुवा शाप ऋषी पे ही उलटा । दुर्वासाके पिछे सुदर्शन चक्र लग गया । अमरीष राजा निजदेश के संत थे और दुर्वासा रिध्दी सिध्दी प्राप्त किया हुवा सिध्द था ।

दुर्वासाने दिया हुवा शाप दुर्वासाके पिछे एक का हजार होकर दुर्वासा पर ही उलटा । उस शापका तपन मिटानेके लिये दुर्वासा स्वर्ग,मृत्यु,पाताल इन तीनो लोकोमे फिरा । जहाँ वहाँ नेकभर भी सहायता नही कर सकते ऐसे विवश शब्द ही दुर्वासाको मिले । दुर्वासा महेश का अवतार है । महेशने निर्बल होकर हाथ झटका दिये और समजाया की तुमने निजसंत का द्रोह किया । यह द्रोहका गुना मुझसे नेकमात्र भी कम नही हो सकता । इसलिये तुम विष्णूके पास जाकर कोशिश करो । दुर्वासा विष्णूके पास जाकर सहायता करनेके लिये करुणा भाकने लगा । सुदर्शन चक्रके आगके तपनसे मेरा तन जल रहा है । आप तीन लोकके कर्तार हो आप मुझे इस तपनसे बचाईये । मै इस तपनको सह नही पा रहा हूँ इसलिये मै तुम्हारे शरणमे आया हूँ । तब तीन लोकके भगवान विष्णूने दुर्वासासे कहा मै तिन लोकके मायाका कर्तार हूँ यह सत्य है । परंतु अमरीष राजा हम सभी कर्तारके कर्तार ऐसे रामजीके संत है । हे दुर्वासा ऋषीजी यह बचन मेरे सत्य मानो । इसमे कोई भ्रम मत रखो । साधूसे द्रोह कर उलटा हुवा गुना जगत मे मै पकड्कर कोई माफ नही कर सकता यह सत्य समजो । इसलिये मेरे शरण लेनेसे तुम्हारी तपन जरासी भी कम नही होगी । यह गुना एकमात्र महादयाळू अमरीष राजा ही माफ कर सकते इसलिये ढिल न करते अमरीष राजाकी शरण लो वही तुम्हारी सहायता होगी । वहाँ ही तुम्हे चैन मिलेगा । सभी कोशिश विफल होनेके बाद दुर्वासा रामस्नेही संत अमरीष राजाके चरणमे पडा । संत की शरण लेते ही दुर्वासाके पिछे सुरजके समान लगी हुई आग चंदनके समान शांत हो गयी । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज महाराज कहते है कि,रामस्नेही साधू अमरिष राजाके साथ किया हुवा गुना तीन लोकके ब्रम्हा,विष्णू ,महादेव आदि देवता तथा सभी सिध्द कोई नही उलटा सके,कोई नही पलटा सके,कोई नही फेर सके,कोई माफ नही करवा सके । इसलिये जगतके सभी नर–नारीयो तुम रामनामी साधू व मायाके सिध्दीयोके पराक्रममे कितना अंतर है यह समजो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि धरती व आकाश जितना अंतर है उससे अधिक सिध्द और साधू के पराक्रम में अंतर है ।।।५।।

सिध्ध अर साध बिच आंतरो बोहोत हे ।। ध्रण ब्रेहेमंड स्हा चोर होई ।।
सूर प्रकास क्यूं रेण मुस्याल रे ।। ओस को नीर क्हां समद कोई ।।
चेत चिंत्रामणी कनक सब धात हे ।। ईंद्र की धेन क्हां गाय दूझे ।।
राव अर रंक सब भूप प्रधान रे ।। पातस्या इंद क्हां जाय बूजे ।।
रांधीयो अन्न बोहो भांत सूं स्वाद रे ।। साब ते नाज बिन होम नाही ।।
दास सुखराम यूं साध जूं सिध के ।। आंतरो भंवर जूं कीट माही ।।६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि सिध्द व साधके सुख देनेके व दु:ख मिटानेके पराक्रममे बहोत फरक है । यह फरक धरती व आकाशमे अंतरसे कई गुना जादा

अंतर का फरक है । चोर के घर की सिमित संपत्ती व साहुकार के घर की अगणित संपत्ती मे जितना अंतर है उससे अधिक अंतर सिध्द व साधू के सुख देने के पराक्रम मे है । साधू सुरज का प्रकाश है तो सिध्द मशाल का उजाला है । सुरज के प्रकाश सर्व जगत सुजता तो मशाल के प्रकाश से घरके कोने तक ही सुजता इतना साधू व सिध्द के दु:ख निवारणे के सत्ता मे फरक है । सिध्द ओस का पानी है तो साधू समंद का जल है । सुरज के तपन से जैसे ओसके पानी की भाप होती वैसे ही सागरके पानी की भाप होती । ओस के पानीके भाप से जगह जगह वर्षा होती । बारह मास सभी जगत को पिने के लिये व खेती बाडी को भरपूर पानीका सुख मिलता ऐसा अंतर सिध्द व साधूके सुख देनेका फरक है । साधू जीव के चिंतन मे आयी हुई हर भयंकर चिंता सदा के लिये मिटानेवाले चिंतामणी समान है तो सिध्द हलकि चिंतासे जरासे समय के लिये मिटानेवाले सोने सरीखे धातू के समान है । इंद्र की कामधेनू गाय जगत के जीवो की मनोकामना पूर्ण करती व जगत की घर घर की गाय कोई मनोकामना पूर्ण नही कर सकती । साधू शिष्य का आवागमन मिटाने सरीखा मनोरथ पूर्ण करता तो सिध्द यह मनोरथ कभी पूर्ण नही कर सकता । ऐसा साधू व सिध्द के पराक्रम मे भारी अंतर है । जैसा राव याने धनसे सुख से भरपूर व रंक याने दु:ख दरीद्री से भरपूर जैसे राजा सत्ताके अधिकारसे भरपूर तो प्रधान गिने हुये सत्ता का अधिकारी,जैसे तेहतीस कोटी देवतावो का मनचाहे सुखो का राजा इंद्र व जगत के प्रजा का गिनेमिने सुखोका बादशाह इन सभी में जैसा अंतर है वैसा साधू व सिध्द के सुख देने के पराक्रम मे अंतर है । हवन मे पकाये गये अनाज को उपयोग मे लेने से हवन का सुख किलने का फल प्रगट नही होता । हवन फलीत होने के लिये बिना पकाया हुवा साबता अनाज चाहिये । इसीप्रकार जगत को भायेगी ऐसी मायावी रिध्दी सिध्दीया प्राप्त किया हुवा संत काल के मुख से निकालकर महासुख मे डालनेका फल फलीत नही करता ऐसा सिध्द व साधू के सत्ता मे अंतर है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है सिध्द व साधू मे जमीनपर रेंगनेवाले और रेंगते रेंगते पैरोके तले कुचले जानेवाले किट समान है तो साधू फुलोके पेडोपर मंडरानेवाले और कभी भी पैरो निचे न आकर कुचले जानेवाले भँवरो के समान है ऐसा साधू व सिध्द मे अंतर है ।।।६।।

साध क्रतार सूं इधक सेंसार मे ।। ग्यान बिचार बिन नाही सूझे ।।
मुढ बाजार मे दाम गांठी बिना ।। बुध बिन बस्त को नांव बूझे ।।
नेण बिन रूप सो घ्राण बिन वास ना ।। जीभ बिन स्वाद सो नाही आवे ।।
प्यास बिन नीर तज भूक बिन अन्नरे ।। प्रख बीन हीर कूं नाही लावे ।।
स्हेर कुळ गावं बिच गेल इधकार हे ।। अगम आगी चले सरस भाई ।।
दास सुखराम यूं संत जन इधक हे ।। दास कूं राम मिले साध माही ।।७।।

सतस्वरुपी साधू सतस्वरुप कर्तारसे पराक्रम मे अधिक होते है । सतस्वरुप साधू व सतस्वरुप कर्तार के पराक्रम का अंतर सतस्वरुप ज्ञान दृष्टीसे विचार किये विना नही सुजता जैसे मूर्ख मनुष्य बाजार मे पैसा भी नही है व वस्तूके सुख की समज भी नही हे फिर भी दुकानोपे जा जाकर वस्तूवोके नाम व किंमत पूछ्ता व घर खाली लौटता इसतरह जगत के मूर्ख लोक सतस्वरूप पाने का कोई भाव नही व समझाया तो समजमे आनेकी बुध्दी नही व सतस्वरुप से अधिक पराक्रमवाले सतगुरु के पास जा जाकर सतस्वरुप का ज्ञान पूछ्ता व ये साधू सतस्वरुप का ज्ञान नही जानते,ये समज बनाकर खाली लौटता । जैसे आँखो के बिना रुप नही देख सकता,नाकके सिवा खुशबू नही ले पाता,जीभ के बिना पकवानो का स्वाद नही ले पाता इसप्रकार चतुर बुध्दी न रहने के कारण सतस्वरुपी साधू सतस्वरुप कर्तार से अधिक है व सतस्वरुप साधू से घट मे सतस्वरुप प्रगट होगा यह नही समज पाता । जैसे प्यास नही है व प्यास शांत करनेवाला जल सामने आने पे भी उसका त्याग करता । भूख नही है व भूख शांत करनेवाला अनाज सामने आने पे अनाज त्याग देता । कठिण समय मे सहाय्य करनेवाला हिरा हिरे की परीक्षा न रहने कारण हिरा मिलने पर भी घर नही लाता । ऐसा ही सतस्वरुप प्रगट कर देनेवाला सतस्वरुपी साधू मिलने पर भी साधू को त्याग देता व कालके मुखमे रखनेवाले सिध्दोके चरणमे जा जाकर शरण लेता । गाँव और शहर के बीच रास्ता रहता वह रास्ता गाँव छोड्कर शहरके ओर जैसा जैसा जावोगे वैसा वैसा वह रास्ता अच्छा आते जायेगा । ऐसे ही माया के विषय वासनावो से निकलकर सतस्वरुप के देश के ओर बढोगे वैसे वैसे अधिकाधिक सतस्वरुप के ज्ञान सुख पावोगे । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की, शिष्य को सुख देनेवाला सतस्वरुपी राम सतस्वरुपी साधू मे ही मिलता । वह सिध्दीयो मे कभी नही मिलता । कोई साधू के शरण मे न जाते सिधा सतस्वरुप का नाम प्रगट करा लेगा यह सोच से वह सतस्वरुप की भक्ती करेगा तो भी वह सतस्वरुप शिष्य मे कभी प्रगट नही होगा उलटा शिष्य रुळ जाता । जैसे फल पेड के नसो से जल चुसने से भरता व पकता । यह पेड जल भंडारसे लेता । अगर फलने यह सोचा की मै जल पेडसे नही लूँगा । पेड मेरे सामने जल भंडारसे जल लेता व मुझे देता । वह जल भंडार मेरे पोहोचमे है ऐसे जलभंडार मे कुदकर सिधा जल क्यो नही पिवू ऐसी समज करता व पेडसे टूटकर जलमे छ्लाँग मारता । कुछ दिनोके बाद जो फल फुलकर न पकते बास आती ऐसा बदबुदार किसी काम का नही रहता ऐसा बनता । इसलिये जगतके नर–नारीयो ने ज्ञान दृष्टीसे यह समजना की फल सिधे जलसे कभी नही पकता उसे पेड की अती आवश्यकता है मतलब सिधे जल के पराक्रमसे जल पहुँचानेवाला पौधा अधिक अधिकारी है । ऐसाही सतस्वरुप पानेके लिये जगत सतस्वरुप प्रगट किये हुये सतस्वरुपी संत शिष्यके घटमे राम प्रगट करा देने के अधिक अधिकारी है ।।।७।।

राम रिसावियो संत जन राख ले ।। काळ की मोट सब चोट टाळे ।।
तेज सूं नीर प्रकास संसार मे ।। काठ कूं सरण ले प्रीत पाळे ।।
अप सू ध्रण अे पाहण प्रकासीया ।। म्हेल जूं मालिया चुण्या भाई ।।
कोपीया नीर सो जीव सर्णे लिया ।। बूंद सो छांट नही लगे आई ।।
ढाल जंजीर सिर टोप की रिझरे ।। सरस सूं सरस बणाय देवे ।।
दास सुखराम लवार जो कोपीया ।। जो वाय कूं सरण जो राख लेवे ।।८।।

राम रिसाने पे जालीम काल की चोटे बडे बडे सिध्द तथा ब्रम्हा,विष्णू,महादेव सरीखे ये देवता समान कोई भी नही रोक सकते,परंतू वही मनूष्य सतस्वरुपी साधू के शरण मे गया तो काल उस मनुष्यको जरासी भी चोट नही दे सकता । जैसे संसारमे जल अग्नीसे जन्मता व काठ (लकडा)यह जलसे उत्पन्न होता,ऐसा जल से जन्म हुवा लकडा जल के शरण मे रहने के कारण अग्नी ने कितना भी क्रोध किया तो भी जल उसे जलने नही देता जब की जल अग्नी से प्रगट हुवा रहता ऐसे वही साधू रामजी से प्रगट हुये रहते परंतु साधू के शरण मे आये हुये दास को रामजी के रुठने की चोटे नही लगने देते । जैसे धरती पत्थर ये जल से पैदा हुये । ऐसे धरती पत्थर से किसीने घर बनाया व घर मे जाकर रहने लगा । बारीश उस घरपर भारी कोपकर बरसने लगी तो भी वह घर शरण मे आये हुये उस जीव को जरासा भी छाटे नही लगने देता । जबकी वह मिट्टी पत्थर ये जलसे पैदा हुये फिर भी जलसे पैदा हुये यह मर्यादा न रखते शरण मे आये हुये जीव को एक भी बूँद नही लगना यह न्याय रखते । इसी प्रकार साधू रामजी से जन्मते परंतू किसी जीवपर रामजी कोप जानेपर शरण मे आये जीव को रामजीके कोप से बचा लेते और काल से मुक्त कर मोक्ष मे पहूँचा देते । जैसे लोहार किसी मनुष्यको ढाल,तलवार,जंजीरे,बकतर और सिरटोप अच्छे बना देता । किसी कारण वह लोहार उस मनुष्य पर खिज जाता व कोप कर मारने दौडता । उस मनुष्य ने बकतर,ढाल,सिरटोप, आदि लोहार ने बनायी हुई सभी वस्तुये पहने रखी रहती । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,लोहार ने कोप कर के उस मनुष्यको चोटे मारने की कैसे भी कोशिश की तो भी एक भी चोट वे बकतर,सिरटोप,आदि वस्तूये अपने शरण मे आये हुये जीव को लगने नही देते इसीप्रकार रामजी रुठने पे साधू शरण आये हुये जीव पे एक भी दु:ख पडने नही देते ।।।८।।

बेद बिचार सो रिष की सरण ले ।। राज की रीत सो भूप पासा ।।
बिध बोपार की स्हा सूं होत रे ।। नार नर संग ज्यां पुत्र आसा ।।
चोर के संग सूं कुबद केती लहे ।। सोग के संग मिल दुख होई ।।
बेद के संग जूं द्रद की पारखा ।। औषधी रोग मिल जाण दोई ।।
बात ज्यूं बिगत सब किसब बिस्तार रे । संगत सा फूल फळ खाय जाही ।।
दास सुखराम युं संत की संगत सूं ।। रमता राम सूं मिले माही ।।९।।

यदि वेद सिखना है तो ऋषीकी शरण लेनी पडेगी तब वेदका ज्ञान हासिल होता । राजरीत सिखनी है तो राजा के पास रहना पडता । व्यापार करने की विधी सिखनी है तो साहुकार याने व्यापारी के पास रहनेसे व्यापार की विधी मिलेगी । स्त्री को पुत्र की चाहना हो तो स्त्री को पुरुषका संग करना पडेगा । वैसे ही चोरके संग रहनेसे कष्ट पडनेवाली अनेक कुबुध्दीया प्रगटेगी । जहाँ कोई मनुष्य गुजर गया ऐसे दु:खी याने सोगी के पास जाने से मरने के बाद की चिंता फिकीर यह दु:ख उपजेगा वह जीव दु:खी होगा । वैद्य का संग करने से रोग व रोग पे लगनेवाली दवाईयाँ ऐसी दोनो चिजो की समज आयेगी । जगत मे ऐसे ही सभी बाते है । जिसके पास जो जो कसब है उसका संग करनेसे करनेवाले को सुख व दु:ख के फल फुल प्राप्त होते । इसीतरह सिध्द व साधू के संगत करने पे है । सिध्द की संगत करने पे जगत को मोह माया के सुखो के फल फुल लगेंगे परंतु आवागमन के दु:ख से मूक्त करा देनेवाला रमता राम कभी नही मिलेगा । वही राम संत की संगत करने से कोई विलंब न होते सहज मे प्राप्त होता व इनाम मे मोक्षपद देता ।।।९।।

।। इति साध सिध्ध पारख को अंग संपूरण ।।